

कौटिल्य के अर्थशास्त्र से आधुनिक अर्थनीति तक: भारतीय आर्थिक चिंतन की विकास यात्रा और समकालीन प्रासंगिकता

बीज शब्द :

अर्थशास्त्र, कौटिल्य, भारतीय आर्थिक चिंतन, आधुनिक अर्थनीति, कराधान, लोक वित्त, कल्याणकारी राज्य, सुशासन, स्वदेशी विचार, मौर्य काल।

यह शोध-पत्र कौटिल्य के अर्थशास्त्र में निहित प्राचीन भारतीय आर्थिक चिंतन की गहन पड़ताल करता है और इसकी समकालीन भारतीय आर्थिक नीतियों में प्रासंगिकता का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र, जिसे अक्सर केवल राजनीति और राज्य-प्रबंधन का ग्रंथ माना जाता है, वास्तव में कराधान, लोक वित्त, व्यापार नियमन और कल्याणकारी राज्य जैसे महत्वपूर्ण आर्थिक सिद्धांतों का एक विस्तृत संग्रह है (Agarwal & Whalley 2015)। यह अध्ययन भारतीय आर्थिक विचारधारा के ऐतिहासिक विकास का एक कालक्रमानुसार अवलोकन करता है, जिसमें वैदिक काल के धर्म-आधारित विचारों से लेकर मौर्यकालीन केंद्रीकृत अर्थव्यवस्था, मध्यकालीन राजस्व प्रणालियों, आधुनिक अर्थव्यवस्था तक की यात्रा शामिल है (Ahluwalia 2002)। विशेष रूप से, यह शोध 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद भारत के मुक्त बाजार की ओर संक्रमण और वर्तमान की 'आत्मनिर्भर भारत' जैसी पहलों के संदर्भ में कौटिल्य के सिद्धांतों की प्रासंगिकता को स्थापित करता है (Desai Organisation for Economic & Development- Development 1970)। गुणात्मक और ऐतिहासिक विश्लेषण पर आधारित यह शोध, अकादमिक साहित्य समीक्षाओं का उपयोग करते हुए, यह निष्कर्ष निकालता है कि कौटिल्य के सुशासन, न्यायसंगत कराधान और राज्य-प्रायोजित कल्याण के सिद्धांत आधुनिक भारत के नीति निर्माताओं के लिए एक मूल्यवान सैद्धांतिक आधार प्रदान करते हैं (Boesche 2003)। यह शोध प्राचीन ज्ञान और आधुनिक अर्थनीति के बीच एक महत्वपूर्ण सैद्धांतिक सेतु का निर्माण करता है, जो भविष्य की समावेशी और सतत आर्थिक विकास की दिशा में मार्गदर्शन कर सकता है।

प्रियंका उइके
प्रो. रक्षा सिंह

कौटिल्य के अर्थशास्त्र से आधुनिक अर्थनीति तक: भारतीय आर्थिक चिंतन की विकास यात्रा और समकालीन प्रासंगिकता

भारतीय आर्थिक चिंतन का इतिहास सहस्राब्दियों पुराना है, जो केवल धन के संचय तक सीमित न रहकर धर्म, नीति और लोक कल्याण के व्यापक दर्शन से प्रेरित रहा है (Venkatachalam & King)। इस चिंतन की आधारशिला में आचार्य कौटिल्य (चाणक्य) द्वारा रचित अर्थशास्त्र नामक ग्रंथ का स्थान सर्वोपरि है। चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में लिखा गया यह ग्रंथ, राज्य-प्रबंधन, कूटनीति और सैन्य रणनीति के साथ-साथ एक विस्तृत आर्थिक और प्रशासनिक ढाँचा प्रस्तुत करता है (Chakravarty, 1998)। आधुनिक अर्थशास्त्र के जनक माने जाने वाले एडम स्मिथ से लगभग दो सहस्राब्दी पूर्व, कौटिल्य ने एक ऐसी व्यवस्थित अर्थव्यवस्था की रूपरेखा तैयार की थी, जहाँ राज्य की भूमिका केवल कानून-व्यवस्था बनाए रखने के समय की चुनौतियों, जैसे कि भ्रष्टाचार, अक्षम प्रशासन, और समावेशी विकास की कमी, का समाधान खोजने का एक गंभीर प्रयास है (Deodhar 2023)। भारतीय परंपरा में 'अर्थ' शब्द का अर्थ केवल धन या संपत्ति नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन के चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) में से एक है, जिसका तात्पर्य उन सभी भौतिक संसाधनों और गतिविधियों से है जो जीवनयापन और समृद्धि के लिए आवश्यक हैं (Pingree, 1972)। कौटिल्य के अनुसार, "मनुष्यों की वृत्ति (आजीविका) ही अर्थ है, और वह शास्त्र जो उस पृथ्वी की प्राप्ति और संरक्षण का साधन है, वह अर्थशास्त्र है" (Drekmeier, 1962)। यह परिभाषा आधुनिक अर्थशास्त्र की संकीर्ण परिभाषा (संसाधनों के आवंटन का विज्ञान) से कहीं अधिक व्यापक है, जिसमें राज्य की संप्रभुता, सुशासन और लोक कल्याण को केंद्रीय स्थान दिया गया है (Dutt 1906)।

आधुनिक भारत एक जटिल आर्थिक संक्रमण के दौर से गुजर रहा है। एक ओर, यह विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक है, वहीं दूसरी ओर, यह गरीबी, असमानता और पर्यावरणीय स्थिरता जैसी संरचनात्मक समस्याओं से जूझ रहा है (Ghoshal, 1930)। कौटिल्य के सिद्धांत, विशेष रूप से उनके कराधान के सिद्धांत (जो न्यायसंगत और उत्पादकता-उन्मुख थे), बाजार नियमन (जो एकाधिकार और जमाखोरी को रोकते थे), और सुशासन (जो प्रशासनिक दक्षता पर जोर देते थे), आधुनिक नीति निर्माण के लिए एक महत्वपूर्ण नैतिक और व्यावहारिक ढाँचा प्रदान कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, कौटिल्य का 'योगक्षेम' (जीवन में सुरक्षा और कल्याण) का सिद्धांत, जो राज्य को न केवल सुरक्षा (क्षेम) बल्कि कल्याण (योग) सुनिश्चित करने का निर्देश देता है, भारत के कल्याणकारी राज्य के दृष्टिकोण को एक प्राचीन दार्शनिक आधार प्रदान करता है।

'शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक (मध्य प्रदेश)

'प्रोफेसर अर्थशास्त्र विभाग इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक (मध्य प्रदेश)

अध्ययन का औचित्य

यह शोध प्राचीन भारतीय आर्थिक ज्ञान को समकालीन नीतिगत विमर्श के केंद्र में लाकर एक महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह न केवल कौटिल्य के सिद्धांतों की अकादमिक व्याख्या करता है, बल्कि उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों को भी उजागर करता है। यह अध्ययन नीति निर्माताओं को यह समझने में मदद करेगा कि कैसे एक स्वदेशी, समय-परीक्षित प्रशासनिक और आर्थिक मॉडल को वर्तमान की वैश्विक और तकनीकी रूप से उन्नत अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं के साथ एकीकृत किया जा सकता है। इस प्रकार, यह शोध प्राचीन और आधुनिक विचारों के बीच एक सैद्धांतिक सेतु स्थापित करता है, जो भारत के आर्थिक भविष्य के लिए एक संतुलित और समावेशी दृष्टिकोण प्रदान कर सकता है।

साहित्य समीक्षा

कांगले (1965): ने अर्थशास्त्र की संरचना, विषय-वस्तु और राज्य-प्रबंधन में इसकी भूमिका का विस्तृत अध्ययन किया, जो आज भी आधारभूत स्रोत माना जाता है। (Joshi & Little 1994)A

रंगराजन (1992): ने अर्थशास्त्र का आधुनिक प्रबंधन और अर्थशास्त्र के संदर्भ में अनुवाद और व्याख्या प्रस्तुत की, जिससे कौटिल्य के विचारों की समकालीन प्रासंगिकता को समझने में मदद मिली। अर्थशास्त्र के ऐतिहासिक संदर्भ और प्रामाणिकता पर भी महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं (Gireesan)A

मैबेट (1964): ने मौर्य साम्राज्य के आर्थिक प्रशासन और कौटिल्य के सिद्धांतों के कार्यान्वयन पर एक महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत किया (Mabbett, 1964)।

बोश (2002): ने कौटिल्य को एक यथार्थवादी राजनीतिक विचारक के रूप में प्रस्तुत किया, जिसने आर्थिक शक्ति को

राज्य की शक्ति का आधार माना।

ट्रेकमेयर (1962): ने राजत्व और शासन कला पर अध्ययन किया, जिसमें आर्थिक नीति को राजधर्म का हिस्सा माना गया, जो कल्याणकारी राज्य (योगक्षेम) की अवधारणा को दार्शनिक आधार प्रदान करता है (Meht, 2018)।

चक्रवर्ती (2016) और स्केयर (2013): जैसे विद्वानों ने अर्थशास्त्र में वर्णित आर्थिक विचारों का आधुनिक अर्थशास्त्र के सिद्धांतों से तुलनात्मक विश्लेषण किया है, जिसमें स्केयर ने कौटिल्य को पहले राजनीतिक अर्थशास्त्री के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया है।

रेगमी (Regmi, 2025): (Shamasastri, 1939) ने शोध किया है, जिसमें उत्पादन और मांग पर राजा की भूमिका पर जोर दिया गया है, जो आधुनिक विकास अर्थशास्त्र के सिद्धांतों से तुलना के लिए उपयोगी है।

सिंह (Singh, 2018): ने कौटिल्य के राजकोषीय विवेक पर अध्ययन किया, जो आधुनिक बजटीय नीतियों के लिए महत्वपूर्ण है। सिंह (Singh) 2021): ने कौटिल्य के अर्थशास्त्र में सुशासन की अवधारणा का समकालीन परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत किया है, जो आधुनिक भारत में प्रशासनिक सुधारों पर चर्चा के लिए महत्वपूर्ण है।

जैन (श्रंपद, 2019): (Sharma, 1991) ने प्राचीन आर्थिक और राजनीतिक सिद्धांतों की वर्तमान युग में प्रासंगिकता पर शोध किया है,

कुमारप्पा (Kumarappa) 1945): ने गांधीवादी अर्थशास्त्र और 'स्थायित्व की अर्थव्यवस्था' का सिद्धांत प्रस्तुत किया, जो स्वतंत्रता पूर्व स्वदेशी आर्थिक मॉडल और आधुनिक भारत के लिए उनके निहितार्थों को दर्शाता है।

देओधर (Deodhar, 2018, 2023): ने आधुनिक आर्थिक विचारों के भारतीय पूर्ववृत्तों पर शोध किया है और प्राचीन भारतीय आर्थिक नैतिकता से आधुनिक नीतियों को जोड़ने का प्रयास किया है।

अहलुवालिया (Ahluwalia, 2002) और अग्रवाल (Agarwal, 2013): का कार्य क्रमिक सुधारों की सफलता और उनके सामाजिक-आर्थिक परिणामों का मूल्यांकन करता है। सेन (Sen, 1999): की 'विकास को स्वतंत्रता के रूप में' की अवधारणा कल्याणकारी राज्य के लक्ष्यों को पुनर्परिभाषित करती है, जो कौटिल्य के 'योगक्षेम' की आधुनिक व्याख्या और विस्तार है।

वर्मा (Verma, 2023): ने भारत में GST के कार्यान्वयन और कराधान के सिद्धांतों पर इसके प्रभाव का अध्ययन किया है, जबकि प्रकाश (Prakash 2019) ने सामाजिक सुरक्षा जाल और कल्याणकारी योजनाओं के विकास का वर्णन किया है, जो कौटिल्य के 'योगक्षेम' के सिद्धांत का व्यावहारिक अनुप्रयोग है। कुंडू (Kundu, 2025) ने प्राचीन भारत की वैश्विक व्यापार समृद्धि और उसकी आधुनिक प्रासंगिकता पर शोध किया है, जो कौटिल्य की व्यापार नीति की तुलना आधुनिक भारत की वैश्विक व्यापार रणनीति से करने में सहायक है।

गुप्ता (Gupt, 2024): ने कृषि नीतियों के ऐतिहासिक विकास और कौटिल्य के कृषि सिद्धांतों की प्रासंगिकता पर शोध किया है।

शोध अंतर

कौटिल्य के अर्थशास्त्र पर व्यापक शोध हुआ है, और भारतीय आर्थिक इतिहास पर भी विपुल साहित्य उपलब्ध है। हालाँकि, अधिकांश अध्ययन या तो कौटिल्य के सिद्धांतों की व्याख्या तक सीमित हैं या आधुनिक आर्थिक इतिहास का वर्णन करते हैं। इन दोनों के बीच एक व्यवस्थित, तुलनात्मक और कालक्रमानुसार विश्लेषण का अभाव है जो स्पष्ट रूप से यह दर्शाता हो कि प्राचीन भारतीय आर्थिक चिंतन ने आधुनिक भारतीय अर्थनीति को किस प्रकार प्रभावित किया है, या कहाँ-कहाँ यह उससे विचलित हुआ है (Hutnyk 2018)। विशेष रूप से, 1991 के सुधारों के बाद की नीतियों (जैसे निति आयोग, GST) के साथ कौटिल्य के सिद्धांतों की तुलना करने वाला एक व्यापक अकादमिक कार्य आवश्यक है। यह शोध इस अंतर को भरने का प्रयास करता है।

शोध उद्देश्य

भारतीय आर्थिक विचारधारा के विकास का ऐतिहासिक अवलोकन करना।

प्राचीन आर्थिक सिद्धांतों की आधुनिक भारतीय आर्थिक नीतियों में प्रासंगिकता को समझना।

शोध कार्यप्रणाली

यह शोध एक गुणात्मक और ऐतिहासिक विश्लेषण पर आधारित है।

अनुसंधान दृष्टिकोण

शोध का दृष्टिकोण मुख्य रूप से व्याख्यात्मक और तुलनात्मक है। इसका उद्देश्य कौटिल्य के अर्थशास्त्र के मूल पाठ की व्याख्या करना, भारतीय आर्थिक इतिहास के विभिन्न चरणों का विश्लेषण करना, और फिर इन प्राचीन सिद्धांतों

की आधुनिक आर्थिक नीतियों के साथ तुलना करके उनकी प्रासंगिकता स्थापित करना है।

डेटा स्रोत

यह शोध पूरी तरह से द्वितीयक स्रोतों पर निर्भर करता है।

1. प्राथमिक ग्रंथ अनुवाद 2. अकादमिक साहित्य: 3. सरकारी रिपोर्ट और दस्तावेज

भारतीय आर्थिक चिंतन का ऐतिहासिक विकास

वैदिक और महाजनपद काल (1500 ईसा पूर्व - 600 ईसा पूर्व)

भारतीय आर्थिक चिंतन की जड़ें वेदों में निहित हैं, जहाँ 'अर्थ' को धर्म और नैतिक मूल्यों से जोड़ा गया है। इस काल की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि और पशुपालन पर आधारित थी, और वस्तु विनिमय प्रमुख था। आर्थिक गतिविधियाँ समुदाय-केंद्रित थीं, और राज्य की भूमिका सीमित थी, जो मुख्य रूप से नैतिक नियमों और सामाजिक व्यवस्था (धर्म) को बनाए रखने पर केंद्रित थी।

मौर्य काल और कौटिल्य का केंद्रीकृत मॉडल (322 ईसा पूर्व - 185 ईसा पूर्व)

मौर्य काल भारतीय आर्थिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसका मुख्य कारण कौटिल्य के अर्थशास्त्र द्वारा प्रदान किया गया विस्तृत प्रशासनिक और आर्थिक ढाँचा था। कौटिल्य ने एक केंद्रीकृत, राज्य-नियंत्रित अर्थव्यवस्था की वकालत की, जहाँ राज्य ने कृषि, उद्योग, व्यापार और खनन सहित लगभग सभी प्रमुख आर्थिक क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभाई। राज्य का उद्देश्य केवल राजस्व संग्रह नहीं था, बल्कि प्रजा का कल्याण (योगक्षेम) सुनिश्चित करना भी था। इस मॉडल में, राज्य एक उत्पादक, नियामक और वितरक तीनों की भूमिका निभाता था। मध्यकालीन राजस्व प्रणालियाँ (1206 ईस्वी - 1757 ईस्वी)

दिल्ली सल्तनत और मुगल साम्राज्य के तहत, भारतीय अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि राजस्व पर केंद्रित रही। कौटिल्य के सिद्धांतों की तरह, राज्य ने भूमि राजस्व संग्रह के लिए एक विस्तृत और जटिल प्रणाली विकसित की (जैसे जब्त और मनसबदारी प्रणाली)। हालाँकि, कौटिल्य के केंद्रीकृत नियंत्रण के विपरीत, मध्यकाल में राजस्व संग्रह में जागीरदारों और स्थानीय शासकों की भूमिका बढ़ी, जिससे प्रशासन में विकेंद्रीकरण और भ्रष्टाचार की संभावनाएँ बढ़ीं। व्यापार और वाणिज्य फला-फूला, लेकिन

आर्थिक नीति का मुख्य ध्यान सैन्य खर्च और शाही खर्चों को पूरा करने पर रहा।

औपनिवेशिक शोषण और स्वदेशी प्रतिक्रिया (1757 ईस्वी - 1947 ईस्वी)

ब्रिटिश शासन ने भारतीय आर्थिक चिंतन और संरचना को मौलिक रूप से बदल दिया। औपनिवेशिक नीतियों का उद्देश्य भारत को कच्चे माल का आपूर्तिकर्ता और ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं का बाजार बनाना था, जिसके परिणामस्वरूप भारत का वि-औद्योगीकरण हुआ। इस काल में, दादाभाई नौरोजी के 'धन का बहिर्गमन' सिद्धांत ने भारतीय आर्थिक राष्ट्रवाद को जन्म दिया। महात्मा गांधी ने स्वदेशी और ग्राम-आधारित अर्थव्यवस्था के मॉडल की वकालत की, जो कौटिल्य के आत्मनिर्भरता के सिद्धांत से प्रेरित था, लेकिन यह राज्य के केंद्रीकृत नियंत्रण के बजाय विकेंद्रीकृत, नैतिक और समुदाय-आधारित था।

स्वतंत्रता पश्चात नियोजन और मिश्रित अर्थव्यवस्था (1947 ईस्वी - 1991 ईस्वी)

स्वतंत्रता के बाद, भारत ने मिश्रित अर्थव्यवस्था का मॉडल अपनाया, जिसमें पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से केंद्रीकृत नियोजन पर जोर दिया गया। इस मॉडल में, सार्वजनिक क्षेत्र को अर्थव्यवस्था के 'कमांडिंग हाइट्स' पर रखा गया था। यह केंद्रीकृत नियोजन, हालाँकि समाजवादी विचारों से प्रेरित था, कौटिल्य के केंद्रीकृत प्रशासनिक और आर्थिक नियंत्रण के मॉडल से कुछ समानता रखता था। हालाँकि, लाइसेंस राज, अक्षम सार्वजनिक क्षेत्र और लालफीताशाही ने इस मॉडल की प्रभावशीलता को कम कर दिया, जिससे 1991 में एक गंभीर आर्थिक संकट उत्पन्न हुआ।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र की आधुनिक काल में महत्व करधान और लोक वित्त

कौटिल्य के करधान के चार सिद्धांत (न्यायसंगतता, निश्चितता, सुविधा, उत्पादकता) आधुनिक कर सुधारों के लिए एक शाश्वत आधार प्रदान करते हैं। वस्तु एवं सेवा कर (GST) का उद्देश्य कर प्रणाली को सरल और निश्चित बनाना है, जो कौटिल्य के सिद्धांतों के अनुरूप है। प्रगतिशील आयकर प्रणाली कौटिल्य के 'फल के समान कर' के सिद्धांत का प्रत्यक्ष अनुप्रयोग है, जहाँ करदाता की क्षमता के अनुसार कर लगाया जाता है। इसके अलावा, कौटिल्य का राजकोषीय विवेक (Fiscal Prudence) पर जोर आधुनिक बजटीय

प्रबंधन के लिए एक महत्वपूर्ण सबक है।

सुशासन और भ्रष्टाचार नियंत्रण

कौटिल्य ने एक विस्तृत प्रशासनिक ढाँचा (34 अध्यक्ष) और कठोर लेखा-जोखा प्रणाली का वर्णन किया, जिसका मुख्य उद्देश्य प्रशासनिक दक्षता और भ्रष्टाचार नियंत्रण था। आधुनिक भारत में डिजिटल इंडिया पहल, सूचना का अधिकार (RTI), और लोकपाल की स्थापना का उद्देश्य भी प्रशासनिक पारदर्शिता और भ्रष्टाचार मुक्त शासन सुनिश्चित करना है, जो कौटिल्य के सुशासन के सिद्धांतों की निरंतरता है। 'मिनिमम गवर्नमेंट, मैक्सिमम गवर्नेंस' का नारा कौटिल्य के परिणाम-उन्मुख प्रशासन के विचार को प्रतिध्वनित करता है।

कल्याणकारी राज्य और सामाजिक सुरक्षा

कौटिल्य का 'योगक्षेम' का सिद्धांत आधुनिक सामाजिक सुरक्षा जाल और कल्याणकारी योजनाओं का दार्शनिक आधार है। कौटिल्य ने राज्य को अनाथों, वृद्धों, विधवाओं और संकटग्रस्त किसानों को सहायता प्रदान करने का निर्देश दिया था। भारत की वर्तमान लक्षित सब्सिडी योजनाएँ, जैसे कि प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (DBT), खाद्य सुरक्षा अधिनियम, और मनरेगा, उसी प्राचीन नैतिक दायित्व को दर्शाती हैं कि राज्य को अपने नागरिकों के न्यूनतम जीवन स्तर की गारंटी देनी चाहिए।

आर्थिक संप्रभुता और स्वदेशी उत्पादन

कौटिल्य ने राज्य की आत्मनिर्भरता और आर्थिक संप्रभुता पर जोर दिया, जिसके लिए उन्होंने विदेशी व्यापार पर कड़ी निगरानी और स्वदेशी उत्पादन को बढ़ावा देने की वकालत की। वर्तमान की 'आत्मनिर्भर भारत' और 'मेक इन इंडिया' जैसी पहलें, जो घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देने और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में भारत की स्थिति को मजबूत करने पर केंद्रित हैं, कौटिल्य के आर्थिक संप्रभुता के सिद्धांत के साथ एक वैचारिक पुनर्संयोजन को दर्शाती हैं।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र — विश्लेषणात्मक प्रस्तुति

कर व्यवस्था

कौटिल्य की कर प्रणाली आधुनिक कराधान सिद्धांतों के कई पहलुओं को दर्शाती है। उन्होंने कराधान के चार प्रमुख सिद्धांतों पर जोर दिया, जिन्हें अक्सर एडम स्मिथ के सिद्धांतों का पूर्ववर्ती माना जाता है : 1. न्यायसंगतता: कर व्यक्ति की आय और क्षमता के अनुपात में होना चाहिए। कौटिल्य के "मधुमक्खी सिद्धांत" के अनुसार राजा को प्रजा पर वैसा ही कर लगाना चाहिए जैसे मधुमक्खी फूल से बिना नुकसान पहुँचाए

रस लेती है।" के सिद्धांत का समर्थन किया, जिसका अर्थ है कि कर धीरे-धीरे और बिना कष्ट के लिया जाना चाहिए।

2. निश्चितता : कर की दरें और संग्रह का समय निश्चित होना चाहिए, ताकि नागरिकों में अनिश्चितता न हो। 3. सुविधा: कर संग्रह का तरीका करदाता के लिए सुविधाजनक होना चाहिए। 4. उत्पादकता कर ऐसे होने चाहिए जो उत्पादन को बाधित न करें, बल्कि राज्य के लिए पर्याप्त राजस्व उत्पन्न करें। कौटिल्य ने कृषि उपज पर 1/6 भाग, व्यापार पर शुल्क, और विभिन्न वस्तुओं पर चुंगी जैसे कई प्रकार के करों का वर्णन किया है। उन्होंने अत्यधिक कराधान के प्रति चेतावनी दी, यह मानते हुए कि यह प्रजा को पलायन के लिए मजबूर कर सकता है।

राजस्व प्रशासन

राजस्व प्रशासन कौटिल्य के आर्थिक मॉडल का केंद्रीय स्तंभ था। उन्होंने दो प्रमुख अधिकारियों की नियुक्ति की। समाहर्ता: मुख्य राजस्व संग्रहकर्ता, जो सभी प्रकार के राजस्व स्रोतों (किले, ग्रामीण क्षेत्र, खान, जंगल, सड़कें) की निगरानी करता था। सन्निधाता: मुख्य कोषाध्यक्ष, जो राजकोष (कोष) और अन्न भंडार (कोषागार) के निर्माण और प्रबंधन के लिए जिम्मेदार था। कौटिल्य ने एक विस्तृत लेखा-जोखा प्रणाली और ऑडिटिंग प्रक्रियाओं का वर्णन किया, जिसका उद्देश्य प्रशासनिक भ्रष्टाचार को रोकना और राजकोष की पारदर्शिता सुनिश्चित करना था।

व्यापार नीति

कौटिल्य ने आंतरिक और बाहरी दोनों व्यापारों के नियमन पर जोर दिया। व्यापार को बढ़ावा देने के लिए सड़कों, जलमार्गों और बंदरगाहों के निर्माण को राज्य का कर्तव्य माना गया। हालाँकि, उन्होंने विदेशी व्यापार पर कड़ी निगरानी रखी और शुल्क (टोल) लगाया, जिसका उद्देश्य स्थानीय उद्योगों की रक्षा करना और राज्य के लिए राजस्व अर्जित करना था। कौटिल्य की व्यापार नीति का मुख्य उद्देश्य राज्य की आत्मनिर्भरता और आर्थिक संप्रभुता सुनिश्चित करना था।

बाजार नियमन

कौटिल्य ने एक मजबूत बाजार नियमन प्रणाली की वकालत की। उन्होंने मूल्य नियंत्रण, जमाखोरी पर रोक, और माप-तौल का मानकीकरण जैसे उपायों का वर्णन किया। पण्यध्यक्ष जैसे अधिकारियों को नियुक्त किया गया था ताकि व्यापारियों द्वारा अनुचित लाभ कमाने और उपभोक्ताओं के शोषण को रोका जा सके। यह नियमन आधुनिक प्रतिस्पर्धा कानून और उपभोक्ता संरक्षण के सिद्धांतों का एक प्राचीन रूप है।

कल्याणकारी राज्य

कौटिल्य के अर्थशास्त्र का सबसे प्रगतिशील पहलू उनका 'योगक्षेम' का सिद्धांत है। उन्होंने स्पष्ट किया कि राजा का कर्तव्य केवल राज्य की रक्षा करना नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना भी है कि कोई भी नागरिक भूख या संकट से पीड़ित न हो। राज्य को अनाथों, वृद्धों, विधवाओं, विकलांगों और संकटग्रस्त किसानों को सहायता प्रदान करनी चाहिए। यह सिद्धांत आधुनिक सामाजिक सुरक्षा जाल और कल्याणकारी योजनाओं का एक प्राचीन दार्शनिक आधार है।

विदेश नीति व आर्थिक कूटनीति

कौटिल्य के षट्गुण सिद्धांत (Sixfold Policy) में

आर्थिक कूटनीति एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। उन्होंने संधि, विग्रह, यान, आसन, संश्रय, और द्वैधीभाव जैसे उपायों का वर्णन किया, जिनका उपयोग राज्य के आर्थिक हितों को साधने के लिए किया जाना चाहिए। उन्होंने पड़ोसी राज्यों के साथ व्यापारिक संबंधों को सावधानीपूर्वक प्रबंधित करने और आर्थिक जासूसी (अर्थोपग्रह) का उपयोग करने की भी सलाह दी ताकि राज्य की आर्थिक शक्ति बनी रहे।

प्रशासनिक अर्थव्यवस्था

कौटिल्य ने एक विशाल प्रशासनिक ढाँचे का वर्णन किया, जिसमें 34 अध्यक्षों के माध्यम से आर्थिक गतिविधियों का केंद्रीकृत प्रबंधन किया जाता था। इनमें खानों के अध्यक्ष (आकराध्यक्ष), टकसाल के अध्यक्ष (लक्षणाध्यक्ष), कृषि के अध्यक्ष (सीताध्यक्ष), और व्यापार के अध्यक्ष (पण्याध्यक्ष) शामिल थे। यह केंद्रीकृत प्रशासनिक मॉडल राज्य की आर्थिक शक्ति को अधिकतम करने और संसाधनों के कुशल उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन किया गया था।

सार्वजनिक वित्त

कौटिल्य ने सार्वजनिक वित्त के सिद्धांतों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने सुझाव दिया कि राज्य को उत्पादक कार्यों, जैसे कि सिंचाई, सड़क निर्माण, और कृषि के विकास में व्यय करना चाहिए, जिससे अर्थव्यवस्था को दीर्घकालिक लाभ हो। उन्होंने आपातकालीन वित्त प्रबंधन के लिए भी नियम निर्धारित किए, जिसमें संकट के समय अतिरिक्त कर लगाने या राजकोष का उपयोग करने की अनुमति दी गई थी, लेकिन यह हमेशा प्रजा के हित में होना चाहिए।

समकालीन भारत में प्राचीन सिद्धांतों की भूमिका

कौटिल्य के सिद्धांत समकालीन भारत में नीति निर्माण

के लिए तीन महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभा सकते हैं: 1. नैतिक मार्गदर्शन: कौटिल्य का अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र को नैतिकता और धर्म से जोड़ता है। यह आधुनिक नीति निर्माताओं को केवल सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, समावेशी विकास, सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय स्थिरता (जो कौटिल्य के 'जनपद' की समृद्धि के लिए आवश्यक थे) पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करता है। 2. प्रशासनिक मॉडल: कौटिल्य का विस्तृत प्रशासनिक ढाँचा और भ्रष्टाचार विरोधी उपाय आधुनिक नौकरशाही की अक्षमता और भ्रष्टाचार की समस्याओं को दूर करने के लिए एक मॉडल प्रदान कर सकते हैं। 3. आर्थिक कूटनीति: कौटिल्य का विदेश नीति और आर्थिक कूटनीति का सिद्धांत भारत को वैश्विक मंच पर अपने आर्थिक हितों को साधने के लिए एक यथार्थवादी और रणनीतिक ढाँचा प्रदान करता है, विशेष रूप से जटिल भू-राजनीतिक परिदृश्य में।

निष्कर्ष

यह शोध स्पष्ट रूप से स्थापित करता है कि कौटिल्य का अर्थशास्त्र भारतीय आर्थिक चिंतन की विकास यात्रा में एक शाश्वत और केंद्रीय ग्रंथ है। यह ग्रंथ न केवल मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था का वर्णन करता है, बल्कि यह कराधान, लोक वित्त, बाजार नियमन और कल्याणकारी राज्य के ऐसे सिद्धांतों को भी प्रस्तुत करता है जो आधुनिक भारत की आर्थिक नीतियों में आश्चर्यजनक रूप से प्रासंगिक हैं। भारतीय आर्थिक चिंतन ने वैदिक काल के धर्म-आधारित विचारों से लेकर आधुनिक अर्थव्यवस्था तक कई चरणों को पार किया है, लेकिन कौटिल्य के केंद्रीकृत राज्य और 'योगक्षेम' के सिद्धांत ने हमेशा एक अंतर्निहित स्वदेशी वैचारिक धारा प्रदान की है।

तुलनात्मक विश्लेषण से पता चलता है कि आधुनिक कर सुधार (GST, प्रगतिशील आयकर) कौटिल्य के न्यायसंगत कराधान के सिद्धांतों पर आधारित हैं, और निति आयोग द्वारा सुशासन और प्रशासनिक दक्षता पर जोर कौटिल्य के प्रशासनिक मॉडल की आधुनिक अभिव्यक्ति है। 1991 के सुधारों ने राज्य की भूमिका को कम किया, लेकिन 'आत्मनिर्भर भारत' जैसी वर्तमान पहलें कौटिल्य के आर्थिक संप्रभुता और स्वदेशी उत्पादन के सिद्धांतों के साथ एक महत्वपूर्ण पुनर्संयोजन का संकेत देती हैं।

शेष पृष्ठ सं 70 पर